

वन और वन्य जीव संसाधन

- 1- विविधता के संदर्भ में विश्व के सबसे बड़े देशों में से एक है यहां विश्व की सारी जैव उप जातियों की 8% संख्या पाई जाती है
- 2- भारत में 10% वन्य वनस्पति जाति और 20% स्तनधारियों के लुप्त होने का खतरा है | इनमें से कई उपजातियां तो नाजुक अवस्था में हैं और लुप्त होने की कगार पर हैं | इनमें चीता ,गुलाबी सिर वाली बत्तख, पहाड़ी कोयल और 3- जंगली चित्तीदार उल्लू और इनसिगनिस जैसे पौधे शामिल हैं |
- भारत में वन आवरण के अंतर्गत अनुमानित 79.42 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है| यह देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.16 % हिस्सा है | (सघन वन 12.2 %, खुला वन 9.14 % और मैंग्रोव वन 0.14%)
- 4- सामान्य जातियां- यह जातियां हैं जिनकी संख्या जीवित रहने के लिए सामान्य मानी जाती है |जैसे पशु, साल,और कुंतक और चीड़ |
- 2- संकटग्रस्त जातियां- वे जातियां हैं जिनके लुप्त होने का खतरा है| जैसे जंगली गधा ,गेंडा , पूंछ वाला बंदर, शेर काला हिरण, मगरमच्छ आदि|
- 3- सुभेद्य जातियां- वे जातियां हैं जिनकी संख्या घट रही है| जैसे नीली भेड़, एशियाई हाथी ,गंगा नदी की डॉल्फिन
- 4- दुर्लभ जातियां- इन जातियों की संख्या बहुत कम है या सुभेद्य है |यदि इनको प्रभावित करने वाली विषम परिस्थितियां परिवर्तित नहीं होती तो यह संकटग्रस्त जातियों की श्रेणी में आ सकती हैं |
- 5- स्थानिक जातियां- प्राकृतिक सीमाओं से अलग विशेष क्षेत्रों में पाई जाने वाली जातियां जैसे कि निकोबारी कबूतर अंडमानी जंगली सूअर और अरुणाचल के मिथुन इन जातियों के उदाहरण हैं |
- 6- लुप्त जातियां- वे जातियां हैं जो इनके रहने के आवासों में खोज करने पर अनुपस्थित पाई जाती हैं जैसे- एशियाई चीता, गुलाबी सिर वाली बत्तख |